



e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 12, Issue 8, August 2023

ISSN INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 8.423

 9940 572 462

 6381 907 438

 ijirset@gmail.com

 www.ijirset.com

प्रभावी पर्यावरण नीति के साथ जीवन की गुणवत्ता।

डॉ. ओम प्रकाश

सहायक आर्चायए भूगोल विभाग, गाँधी स्मारक डिग्री कालेज, सुरजन नगर, जय नगर मुरादाबाद (उ.प्र.)

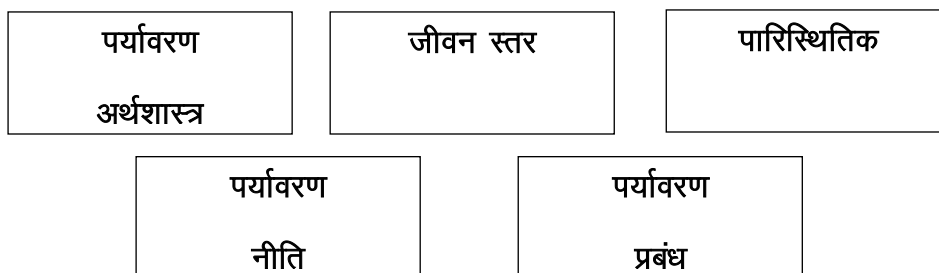
सार—

आर्थिक विकास और जीवन की गुणवत्ता अकेले आर्थिक विज्ञान पर्यावरणीय अर्थशास्त्र द्वारा उत्पन्न समस्याओं का संतोषजनक उत्तर नहीं दे पाएगा। अर्थशास्त्री अब एक निश्चित प्रकार के आर्थिक विकास के पारिस्थितिक परिणामों को नजरअंदाज नहीं कर सकता है, और पारिस्थितिकीविज्ञानी एक प्रभावी पर्यावरण नीति के आवेदन से उत्पन्न आर्थिक और सामाजिक समस्याओं को नजरअंदाज नहीं करेगा। मानव प्रगति के विचार को अब आर्थिक विकास की अवधारणा के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। ऐसा करने के लिए मनुष्य और उसके पर्यावरण के बीच के जटिल और नाजुक रिश्तों की फिर से जांच करना आवश्यक होगा ताकि मनुष्य एक ऐसे विकास की ओर बढ़ सके जो उसके पर्यावरण के लिए हानिकारक न हो। प्राकृतिक और मानव निर्मित पारिस्थितिक तंत्र में पदार्थ और ऊर्जा प्रवाह के आवश्यक संतुलन को बहाल या संरक्षित किया जाना चाहिए। हमें विभिन्न पारिस्थितिक तंत्रों पर मानव गतिविधियों के प्रभावों का बेहतर ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, और परिणामस्वरूप, अंतःविषय प्रकृति के अनुसंधान को तेज करना चाहिए। इसके अलावा, वृद्धि और विकास मॉडल पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। पर्यावरण के मामले में, विकास की तरह, अब आवश्यक और अनावश्यक के बीच अंतर करना आवश्यक है। पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति समग्र दृष्टिकोण की वकालत करने का यह एक अतिरिक्त कारण है।

मुख्य शब्द—पर्यावरण अर्थशास्त्र, जीवन की गुणवत्ता, पारिस्थितिक, पर्यावरण नीति, पर्यावरण प्रबंधन, विकास

प्रस्तावना—

जिनके विश्लेषण और विनियमन में सटीक और प्राकृतिक, सामाजिक और मानव विज्ञान के साथ-साथ कला के सभी अनुशासन शामिल हैं, इन समस्याओं का नैतिक आयाम दूसरों की तुलना में कम महत्वपूर्ण नहीं है? देशों को विकास और पर्यावरण के बीच चयन करने की ज़रूरत नहीं है। यह एक गलत विकल्प होगा। बल्कि, उन्हें विकास की गुणवत्ता या प्रकार चुनने की ज़रूरत है। इसलिए उन्हें पर्यावरण को विकास का एक आवश्यक आयाम मानना होगा, क्योंकि पर्यावरण और विकास से संबंधित उद्देश्य और रणनीतियाँ एक दूसरे के पूरक हो सकते हैं। इस नई अवधारणा की कल्पना सबसे पहले पर्यावरणीय अर्थशास्त्र, जीवन की गुणवत्ता, पारिस्थितिक, पर्यावरण नीति, विकास, दैनिक जीवन के पर्यावरण प्रबंधन के स्तर पर की जानी चाहिए—



बुनियादी मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि जो जीवन की एक निश्चित गुणवत्ता का गठन करती है— पोषण, स्वास्थ्य, सामाजिक संबंध, । लेकिन इसे जीवमंडल की आत्मसात और प्रतिक्रिया क्षमताओं का सम्मान करते हुए रहने की स्थिति में सुधार और विकास को निरंतर बढ़ावा देने का भी लाभ उठाना चाहिए। यह अल्पकालिक अंतर्राष्ट्रीय विकल्पों के संदर्भ में सामग्री और ऊर्जा संसाधनों के प्रबंधन और वितरण के लिए नई नीतियों के विकास को निर्धारित करता है, विशेष रूप से रीसाइक्लिंग गतिविधियों के कार्यान्वयन के माध्यम से, सभी की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए एक नई व्यवस्था वाली अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का डिजाइन। ग्रह की आबादी, भावी पीढ़ियों को बुनियादी मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि को गिरवी रखे बिना, जो जीवन की एक निश्चित गुणवत्ता का गठन करती है।

पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य

अभी भी बहुत कम विश्वविद्यालय शिक्षक हैं जिनके पास बहु-विषयक शिक्षण में वास्तविक योगदान देने में सक्षम होने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण है। अभ्यासरत शिक्षकों को अतिरिक्त जानकारी प्रदान करने के लिए अभी भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। अंत में, हम अभी भी स्कूल और गैर-स्कूल माइक्रोलॉजिकल शिक्षा के उद्देश्यों, सामग्री, विधियों और तौर-तरीकों को स्पष्ट करके परिभाषित और कार्यान्वित करने के उद्देश्य से वैश्विक रणनीतियों को विकसित करने या सही करने में सक्षम होने से बहुत दूर हैं। लाभार्थियों की विभिन्न श्रेणियों के लिए विभिन्न स्तरों पर स्कूल का आयोजन किया गया। विभिन्न स्थितियों में, ऐसी शिक्षा के लिए वैश्विक लक्ष्यों का पता लगाना कठिन है। उन्हें वास्तव में प्रत्येक समाज और प्रत्येक क्षेत्र की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिस्थितिक वास्तविकताओं और विशेष रूप से उनके विकास के उद्देश्यों के अनुरूप होना चाहिए। पर्यावरण शिक्षा का एक प्राथमिक उद्देश्य लोगों को पर्यावरण की जटिल संरचना को समझने में सक्षम बनाना है, क्योंकि यह इसके भौतिक, जैविक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं की परस्पर क्रिया से उत्पन्न होता है। नतीजतन, इसे व्यक्ति, और इस प्रकार मानव समुदायों को, अंतरिक्ष और समय में इन विभिन्न तत्वों की परस्पर निर्भरता की व्याख्या करने के साधन प्रदान करने चाहिए, ताकि संतुष्टि के लिए संभावनाओं का सोच-समझकर और सावधानी से उपयोग किया जा सके। मानवता की वर्तमान और भविष्य की भौतिक और सांस्कृतिक आवश्यकताएँ। इसके अलावा, इस शिक्षा को विकास प्रयासों में पर्यावरण के महत्व के बारे में जागरूकता में योगदान देना चाहिए।

प्रभावी पर्यावरण नीति के लिए पर्यावरण प्रबंधन की आवश्यकता।

पर्यावरण प्रबंधन को अर्हता प्राप्त करने के लिए, एक नई अवधारणा को परिभाषित किया जा सकता है— पर्यावरण-विकास। इस पर्यावरण प्रबंधन को प्राप्त करने के लिए पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता है, साधारण जानकारी पर्याप्त नहीं है। वास्तव में, मानवीय दृष्टिकोण, दृष्टिकोण और व्यवहार को बदलना और नया ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। इस अवधारणा का शिक्षा पर काफी प्रभाव पड़ता है। इतने बड़े वैचारिक और संस्थागत परिवर्तन में निहित कठिनाइयों के लिए स्थिति के क्रमिक विकास की आवश्यकता होती है। अब से, यह विश्व स्तर पर पर्यावरण की चेतना और नैतिकता को सुदृढ़ करने की अनुमति देने वाली नींव स्थापित करने का प्रश्न है; जीवित पर्यावरण में सुधार की समस्याओं का सामना करने के लिए वैज्ञानिक और तकनीकी क्षमताओं के विकास के पक्ष में तंत्र भी बनाना। नई विकास नीतियों की संकल्पना, निर्णय और नियंत्रण की प्रक्रिया में जनसंख्या की प्रभावी भागीदारी को प्रोत्साहित करना भी आवश्यक है। इस संबंध में, हम विभिन्न स्तरों पर सामान्य और विशिष्ट शिक्षा को संशोधित किए बिना मानव पर्यावरण की समस्याओं का व्यवहार्य समाधान

प्रदान करने की उम्मीद नहीं कर सकते हैं, जिससे लोगों को, चाहे उनकी उम्र और सामाजिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो, मनुष्य को उसके जीवन से जोड़ने वाले मूलभूत संबंधों को समझने में सक्षम बनाया जा सके। पर्यावरण। इस जीवित वातावरण के निरंतर सुधार के लिए जिम्मेदार व्यवहार को प्रोत्साहित किया जाएगा।

पर्यावरण शिक्षा जरूरी है.

पर्यावरण संबंधी मुद्दों के बारे में जन जागरूकता बढ़ाने में जनसंचार माध्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालाँकि, इस प्रकार की जानकारी सीमित है, क्योंकि यह अक्सर सतही या वास्तविक पर जोर देती है। इसके अलावा, यह वास्तव में केवल उन व्यक्तियों को सूचित करता है जिन्हें पहले ही प्रशिक्षित किया जा चुका है। इसलिए पर्यावरण शिक्षा आवश्यक है। इसे न केवल जागरूकता बढ़ानी चाहिए, बल्कि दृष्टिकोण भी बदलना चाहिए और नए दृष्टिकोण और जागरूकता प्राप्त करनी चाहिए। इस तरह के डिज़ाइन के स्पष्ट रूप से महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं क्योंकि यह शिक्षा स्थायी और सभी के लिए खुली होनी चाहिए, इसे शिक्षा के सभी स्तरों पर, स्कूल और स्कूल के बाहर दोनों स्तरों पर लागू किया जाना चाहिए। फिर संस्थागत संरचनाओं को संशोधित करना आवश्यक होगा ताकि ये दो प्रकार की शिक्षा पूरक हों, और प्रत्येक समुदाय के सभी शैक्षिक संसाधनों का समन्वय करना, या यहां तक कि उन्हें एकीकृत करना भी आवश्यक होगा। यह शिक्षा पर्यावरणीय समस्याओं की रोकथाम और समाधान में आवश्यक भूमिका निभा सकती है—लेकिन यह स्पष्ट है कि शैक्षिक प्रयास केवल तभी अपने सभी प्रभाव उत्पन्न कर सकते हैं यदि हम विभिन्न महत्वपूर्ण कारकों को भी ध्यान में रखें, जैसे, उदाहरण के लिए, पर्याप्त कानून, और कानूनों के उचित अनुप्रयोग को नियंत्रित करने के उपाय, जनसंचार माध्यमों की कार्रवाई, आदि। पर्यावरण के सुधार में प्रभावी योगदान देने के लिए कारकों के इस समूह को एक ही दिशा में और सुसंगत तरीके से हस्तक्षेप करना चाहिए।—समझ में, एक नए गतिरोध में और मानव-प्रकृति संबंध विकृत हो गए हैं?

पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान।

प्रकृति के साथ एक शत्रु के रूप में व्यवहार करने के बाद, जिसे हमें तोड़ना, हराना, हावी होना था, अब हमें अक्सर पीड़ित जीवमंडल के साथ प्रस्तुत किया जाता है जिसे हमें सुरक्षा, संरक्षण, सुरक्षा और जीवित रहने में मदद करनी होती है। कोई भी दो दृष्टिकोण पर्यावरणीय समस्याओं को सही ढंग से प्रस्तुत करने और हल करने की अनुमति नहीं देते हैं। जीवमंडल को अपने आप में संरक्षित करने की आवश्यकता नहीं है। यह प्रकृति में हमारा स्थान है जिसे हमारी अज्ञानता या प्राकृतिक प्रणालियों के संचालन तंत्र को ध्यान में रखने से इनकार करने से खतरा है, ओह हम उत्पादन और उपभोग करते हैं। इन प्रणालियों के वर्तमान तत्व, मनुष्य के अस्तित्व में आवश्यक रूप से प्रकृति को ऐसी स्थिति में बनाए रखना शामिल है जो मानव जीवन के अस्तित्व का पक्षधर हो। लेकिन क्या इन पर्यावरणीय समस्याओं के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए सभी साधन अच्छे हैं? क्या कुछ लोगों द्वारा आवश्यक समग्र दृष्टिकोण को अवरुद्ध करने या विकृत करने की संभावना नहीं है? कुछ समय पहले, प्लेन उद्देश्यों के लिए राष्ट्रीय अभियानों के हिस्से के रूप में, एक टेलीविजन चैनल ने एक जलता हुआ जंगल दिखाया और अपनी पीड़ा का रोना जारी किया जो असहनीय होना चाहता था! आइए हम इन्हें छोड़ दें, आप चाहते हैं, ये आसान प्रभाव यह हमारी भावुकता, आत्म-संरक्षण की हमारी प्रवृत्ति, हमारी प्रभावकारिता, हमारी भावनात्मक क्षमताओं के लिए नहीं है, हमें इस मामले में अपील करनी चाहिए, बल्कि, बहुत अधिक मौलिक रूप से, आत्म-संरक्षण की हमारी प्रवृत्ति, हमारी बुद्धि और हमारी कल्पना। जटिल परिस्थितियों के संदर्भ में मध्यम और दीर्घावधि में हमारे तर्क कौशल को विकसित किया जाना चाहिए।

और यह, एक ऐसे दृष्टिकोण में जो अब न तो क्षेत्रबद्ध है और न ही समय का पाबंद है, बल्कि जो व्यक्ति, उसके कार्यों और उनके परिणामों को उस वातावरण में पुनरु एकीकृत करता है जिसमें वे विकसित होते हैं। आवास, फैक्ट्री स्थापित करना, जंगल, खदान, खेत का दोहन करना, सड़क बनाना, कचरा खाली करना या अपशिष्ट जल का निर्वहन करना, ये सभी कार्य, वर्तमान और आवश्यक, आर्थिक लाभप्रदता की अनिवार्यताओं के अनुसार किए जाते हैं और – हम इसे अब जानते हैं – प्राप्त करने वाले वातावरण के पात्रों, संभावनाओं और सीमाओं के पर्याप्त विश्लेषण के बिना। इन गलत तैयारी वाली कार्रवाइयों में शामिल हैं।

पर्यावरणवादी दृष्टिकोण और सामाजिक-आर्थिक संदर्भों पर इसके प्रभाव-

सामान्यतः दो प्रकार के हानिकारक परिणाम होते हैं। पहला, पर्यावरण का पूरी तरह से उपयोग नहीं किया जाता है, यह केवल एक समर्थन है, और उपयोगकर्ता को हमारे ज्ञान की वर्तमान स्थिति में सबसे उपयुक्त पारिस्थितिक समाधान, इसलिए सबसे प्रभावी, से लाभ नहीं मिलता है। फिर, इस कम उपयोग के अलावा, मध्यम या लंबी अवधि में, पर्याप्त प्रारंभिक विश्लेषण के बिना या यदि आवश्यक हो तो इन विश्लेषणों के परिणामों को ध्यान में रखे बिना लागू किए गए कार्यों के नकारात्मक प्रभाव भी सामने आते हैं। इस बर्बादी और इन त्रुटियों से कैसे बचें? क्या हमें उन लोगों को दोष देना चाहिए जो इन्हें अपनाते हैं या जो उनसे लाभ उठाते हैं? लक्ष्य को हासिल करना बहुत कठिन होगा और अगर होगा भी, तो निस्संदेह यह अपर्याप्त साबित होगा और इसके खतरनाक परिणाम हो सकते हैं। क्षति और हानि के लिए भुगतान करके? लेकिन असली मैनेजर कौन है? कुछ देशों में लागू प्रदूषक भुगतान करता है सिद्धांत का उदाहरण दिखाता है कि इस मामले में उठाए गए कानूनी और आर्थिक उपाय लक्षित घटना को समाप्त करने में विफल रहते हैं और केवल जिम्मेदारियाँ बदलते हैं, प्रत्येक जिम्मेदारी और जुर्माना लगाते हैं। उत्पादन और उपभोग के कार्य दिए गए सामाजिक-आर्थिक संदर्भों में किए जाते हैं; यदि पर्यावरण पर उनके प्रभावों के प्रति पर्यावरणवादी दृष्टिकोण केवल इन गतिविधियों को दंडित करने में शामिल है, तो वे केवल आंशिक, समयबद्ध समाधान प्राप्त करेंगे जिन्हें आर्थिक स्थिति के अनुसार छोड़ दिया गया है। पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति वैश्विक दृष्टिकोण से ही पानी में तलवार की नीति और कानूनी एवं आर्थिक रुकावटों से बचना संभव हो सकेगा।

पर्यावरण शिक्षा का विकास-

विभिन्न देशों में, इस शिक्षा का विकास एक नए संस्थागत ढांचे की स्थापना से हुआ है, जिसमें पर्यावरण संरक्षण को अक्सर एकीकृत किया गया स्कूलों में, वर्तमान में पारंपरिक विषयों के शिक्षण पद्धति में पर्यावरण से संबंधित तत्वों को शामिल करने के प्रयास किए जा रहे हैं, और ऐसी अध्ययन इकाइयाँ और शिक्षण सामग्री विकसित की जा रही हैं जो शहरी और दोनों ग्रामीण के लिए रुचिकर हैं। समुदाय. उच्च शिक्षा स्तर पर, कई देशों में पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर विशेष पाठ्यक्रम, सेमिनार और प्रशिक्षण पाठ्यक्रम हुए हैं। कभी-कभी विश्वविद्यालयों और तकनीकी संस्थानों में विशेष संकाय या पर्यावरण अध्ययन कार्यक्रम भी बनाए गए हैं। पर्यावरण से संबंधित शिक्षा की विशिष्ट प्रकृति के अनुसार, कई देशों में भागीदारी और पहल की भावना को बड़ा स्थान देते हुए कई पाठ्यतर या गैर-शैक्षिक गतिविधियाँ शुरू की गई हैं भ्रमण, अध्ययन दौरे और क्षेत्रीय कार्य, की जाने वाली गतिविधियाँ युवा संघों, क्लबों, राजनीतिक आंदोलनों और यूनियनों द्वारा। युवाओं से आपसी सहायता अभियानों में सहयोग करने का आह्वान किया गया है, युवा कार्य शिविर खोले गए हैं और जागरूकता बढ़ाने के लिए पर्यावरण से जुड़े विषयों पर यात्रा प्रदर्शनियों, प्रतियोगिताओं और सम्मेलनों का उपयोग किया गया है। समस्या। जनसंचार माध्यमों ने पर्यावरण से संबंधित जानकारी के प्रसार में बहुत योगदान दिया है।

प्रकाशनों ने विभिन्न हालिया वैज्ञानिक खोजों को लोकप्रिय बनाया है और पारिस्थितिक फिल्म समारोह आयोजित किए गए हैं। कुछ मामलों में, कार्यों के समन्वय के लिए एक पर्यावरण शिक्षा परिषद बनाई गई है। माइक्रोलॉजिकल शिक्षा कार्यक्रम हमेशा विशेष रूप से शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत नहीं आते हैं, वे पर्यावरणीय समस्याओं से संबंधित अन्य मंत्रालयों, जैसे स्वास्थ्य, कृषि, स्थानिक योजना और सामुदायिक विकास, साथ ही, जहां उपयुक्त हो, पर्यावरण मंत्रालय पर भी निर्भर हो सकते हैं। इन प्रयासों और उपलब्धियों के बावजूद, कई कठिनाइयाँ बनी हुई हैं। प्राप्त परिणाम प्रथम विद्यालयों की तुलना में माध्यमिक विद्यालयों में कम अच्छे दिखाई देते हैं। कर्मचारियों के प्रशिक्षण पर बहुत कम ध्यान दिया गया है, विशेषकर स्कूल से बाहर की पर्यावरण शिक्षा पर।

निष्कर्ष –

इस प्रयोजन के लिए, इसे विकास के उन विकल्पों के बारे में जानकारी का प्रसार करना चाहिए, जो पर्यावरण को यथासंभव कम नुकसान पहुंचाते हैं, और इसके साथ अधिक सामंजस्यपूर्ण संबंधों की अनुमति देने वाली जीवन शैली को अपनाने को बढ़ावा देना चाहिए। अंत में, पर्यावरण शिक्षा को आधुनिक दुनिया की आर्थिक, राजनीतिक और पारिस्थितिक अन्यायश्रितताओं के बारे में स्पष्ट जागरूकता देनी चाहिए। इस अर्थ में, इस शिक्षा की देशों और क्षेत्रों के बीच एक जिम्मेदार और एकजुट भावना विकसित करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है, चाहे उनके विकास का स्तर कुछ भी हो, ताकि मानव पर्यावरण के सुधार के संरक्षण को सुनिश्चित करने वाली एक अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था स्थापित की जा सके।

11—संदर्भ—

1. कौशिक, एस.डी. एवं गौतम, अलका, संसाधन भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।
2. कुमार, हेमंत एवं गौरव और अनुराधा, पर्यावरण शिक्षा, विनोद पब्लिकेशन, लुधियाना
3. नारायण, सुनीता, राजस्थान पत्रिका, 'एक ही पृथ्वी' लेख में, जून 2022 5.मोना, सुथार, राजस्थान पत्रिका, सामयिक लेख, जून 2022
4. जैन, गरिमा, पर्यावरण अध्ययन, यूनिवर्सिटी बुक हाउस प्रा. लि. जयपुर
5. इंडिया थोरेस्ट रिपोर्ट— 2017, दिनांक 04-03-2018 8.प्राथमिक
6. बास, एस. (2006). गरीबी में कमी को अपरिवर्तनीय बनाना मलेनियम इकोसिस्टम आकलन के विकास निहितार्थ। एमडीजी के ब्रीफिंग पेपर के लिए IIED पर्यावरण। पर्यावरण और विकास पर अंतरराष्ट्रीय संस्थान, लंदन
7. फॉक, आर. (2000). मानवाधिकार क्षितिजरू वैश्वीकृत दुनिया में न्याय की खोज। रटलेज, न्यूयॉर्क, एनवाई
8. एफएओ (2004ए)। खाद्य और कृषि राज्य 2003-2004रू कृषि जैव प्रौद्योगिकी-गरीबों की जरूरतों को पूरा करना? संयुक्त राष्ट्र का खाद्य एवं कृषि संगठन, रोम
9. क्लंक, सी. और मचाडो, आर. (2005)। ब्राजीलियाई जेराडो का संरक्षण। में संरक्षण जीवविज्ञान 19(3)रू707-713
10. कोलांकिविज़, एल. और बेक, आर. (2001)। बड़े अमेरिकी शहरों में फैलाव कारकों का आकलन, 100 सबसे बड़े शहरीकृत क्षेत्रों पर अमेरिकी जनगणना ब्यूरो के आंकड़ों का विश्लेषणसंयुक्त राज्य अमेरिका।
11. कोर्टेन, डी. (2001)। जब निगम दुनिया पर राज करते हैं, दूसरा संस्करण। कुमार प्रेस, Bloomfield



12. कुरा, वाई., रिवेज, सी., होशिनो, ई. और मॉक, जी. (2004)। उत्तर के लिए मछली पकड़नारू बनाना वैश्विक मछली संकट की भावना. विश्व संसाधन संस्थान, वाशिंगटन, डीसी
13. ले बिलियन, पी. (2001)। युद्ध की राजनीतिक पारिस्थितिकीरू प्राकृतिक संसाधन और सशस्त्र संघर्ष। राजनीतिक भूगोल 20रू 561–584
14. स्पेंसर, डी. (2001)। क्या वे जीवित रहेंगे? उप–सहारा में छोटे किसानों के लिए संभावनाएँ अफ्रीका. विजन 2020 में प्रस्तुत पेपररू 2020 तक सभी के लिए सतत खाद्य सुरक्षा। अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन (आईएफपीआरआई), 4–6 सितंबर, 2001
15. स्पेथ, जे. (2004)। सुबह का लाल आकाशरू अमेरिका और वैश्विक संकट पर्यावरण। येल यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यू हेवन और लंदन



Impact Factor: 8.423



INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

 9940 572 462  6381 907 438  ijirset@gmail.com



www.ijirset.com

Scan to save the contact details